



VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 04 AUG 2017
SUBMITTED IN 3 HOURS
RECEIVED

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1022)

Name of Candidate	KANTA JANUJIR		
Medium Eng./Hindi	HINDI	Registration Number	42370
Center	NUKHARJEE NAWAR	Date	4/08/17

INDEX TABLE		
Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	12.5	
2	12.5	
3	12.5	
4	12.5	
5	12.5	
6	12.5	
7	12.5	
8	12.5	
9	12.5	
10	12.5	
11	12.5	
12	12.5	
13	12.5	
14	12.5	
15	12.5	
16	12.5	
17	12.5	
18	12.5	
19	12.5	
20	12.5	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

- Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
- There are TWENTY questions printed in ENGLISH & HINDI इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
- All questions are compulsory.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
- Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
- Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
- Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

75, 3rd Floor, Old Rajinder Nagar Market, Near Axis Bank, New Delhi – 110060

103, 1st Floor, B/1-2, Ansal Building, Behind UCO Bank, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi – 110009

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Answer all the questions in NOT MORE THAN 200 WORDS each. Content of the answers is more important than its length. All questions carry equal marks.

12.5X20=250

1. What do you understand by seasonal shifting of pressure belts? What impact does it have on the formation of various climatic regions across the globe? Discuss its socio-economic significance.

वायुदाब पेटियों के मौसमी स्थानांतरण से आप क्या समझते हैं? विश्व भर में विभिन्न जलवायु प्रदेशों के निर्माण पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? इसके सामाजिक-आर्थिक महत्व की चर्चा कीजिए।

वायुदाब पेटियों के मौसमी स्थानांतरण
से तात्पर्य मौसमी परिवर्तन (यथा - शीतकाल, ग्रीष्म
काल आदि) के अनुसार वायुदाब में कमी या
वृद्धि का होना है। वायुदाब का तापमान से विपरीत
सम्बन्ध है, अर्थात् तापमान अधिक होने पर वायुदाब
कम तथा वायुदाब कम होने पर तापमान का अधिक
होना है।

उदाहरण → शीतकाल में सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में
ज्यादा ऊँचा होता है जिससे उत्तरी गोलार्ध में
कम वायुदाब का क्षेत्र बन जाता है जिससे ब्रीज
बहर चलती है।

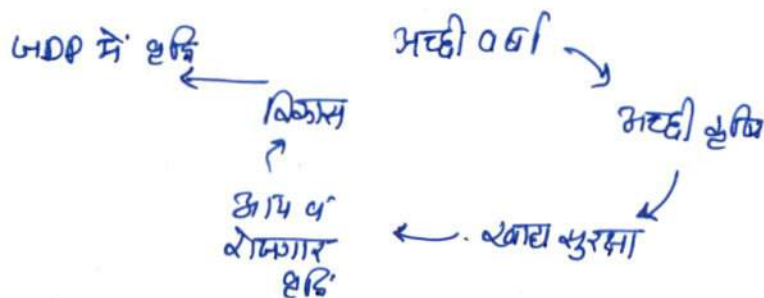
- भूमध्य सागरीय प्रदेशों शीतकाल में पड़मा पवनों
के कारण वर्षा प्राप्त करते हैं।

⇒ ग्रीष्मकाल में सूर्य उत्तरायण चमकता है।

जिससे ऊपरी गोलाई में कम वायुदाब होगा है जिससे अधिकतर भागों में वर्षा प्राप्त होगी है तथा -
भारत में मानसूनी वर्षा ।

⇒ वायुदाब केंद्रों का मौसमी स्थानान्तरण विभिन्न जलवायु प्रदेशों का निर्माण करता है क्योंकि वर्षा की मात्रा, तापमान एवं आर्द्रता की मात्रा के अनुसार जलवायु प्रदेश विकसित होते हैं यथा -
शुष्क प्रदेश, उष्ण कटिबंधीय प्रदेश (पादि)
सामाजिक - आर्थिक महत्व -

- वायुदाब केंद्रों के मौसमी स्थानान्तरण से वर्षा होती है (जहाँ कम वायुदाब हो) जलसंकट



- तथा - भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का दक्षिणी पश्चिमी मानसून पर निर्भर होगा

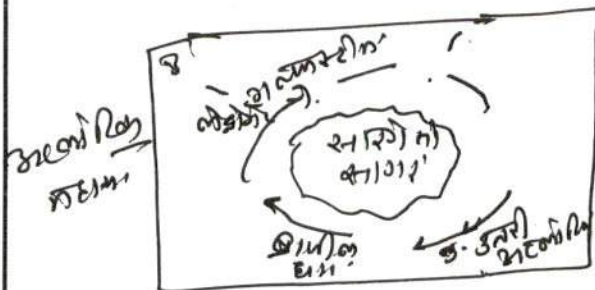
- अटकी वर्षा होने पर उत्पादन ज्यादा →
आर्थिक विकास ज्यादा → ज्यादा आय →
ज्यादा रोजगार
इसलिए पल नीचे, -घ. मा. नीचे का
भारतीय जनजाति पर आर्थिक प्रभाव पड़ता
है

2. Explain the reasons for the formation of Sargasso Sea. Also, examine the factors for it being a region with one of the highest ocean salinity.

सारगैसो सागर के निर्माण के कारणों की व्याख्या कीजिए। साथ ही, उन कारकों का भी परीक्षण कीजिए जिनके कारण यह उच्चतम महासागरीय लवणता के क्षेत्रों में से एक है।

सारगैसो सागर अटलांटिक महासागर में स्थित क्षेत्र है जहाँ सागरीय जल क्षेत्रों शान्त रहता है और ज्यादा परिवर्तन नहीं होता।

कारण सारगैसो सागर के निर्माण का कारण महासागरीय धाराएँ हैं जो सारगैसो सागर के चारों ओर चलती हैं परंतु इस क्षेत्र में कोई प्रभाव नहीं डालती। यद्यपि यह क्षेत्र शान्त ही रहता है।



यह क्षेत्र उच्चतम महासागरीय लवणता के क्षेत्रों में है क्योंकि यहाँ का पानी ज्यादा ठंडा नहीं पाना।

नहीं है न कि ही। अन्य धाराओं यहाँ
पानी लेकल जारी है इससे यह क्षेत्र
उत्पन्न नदीसमूचीय लकणता होगी से
शामिल है

3. Why are river deltas important? Discuss the existing threats to river deltas and the measures needed to overcome these threats.

नदी डेल्टा क्यों महत्वपूर्ण होते हैं? नदी डेल्टाओं के समक्ष विद्यमान खतरों एवं इन खतरों से निपटने के लिए आवश्यक उपायों पर चर्चा कीजिए।

नदी डेल्टा नदियों की निक्षेपण क्रिया
के मूलस्वरूप बनने वाली स्थलाकृतियाँ हैं जिसमें
अ. नदी अपना अवसाद समुद्र में मिलने से पहले
होड़ देती है। यह अनेक आकार के होते हैं यथा -
झण्डा पंख डेल्टा, —

नदी डेल्टा पारिस्थितिकी तंत्र हेतु महावपूर्ण
होते हैं।

— इन स्थानों पर महत्वपूर्ण वन-संसाधन पाये
जाते हैं यथा - गंगा-ब्रह्मपुत्र का नदी डेल्टा
पर सुंदरबन

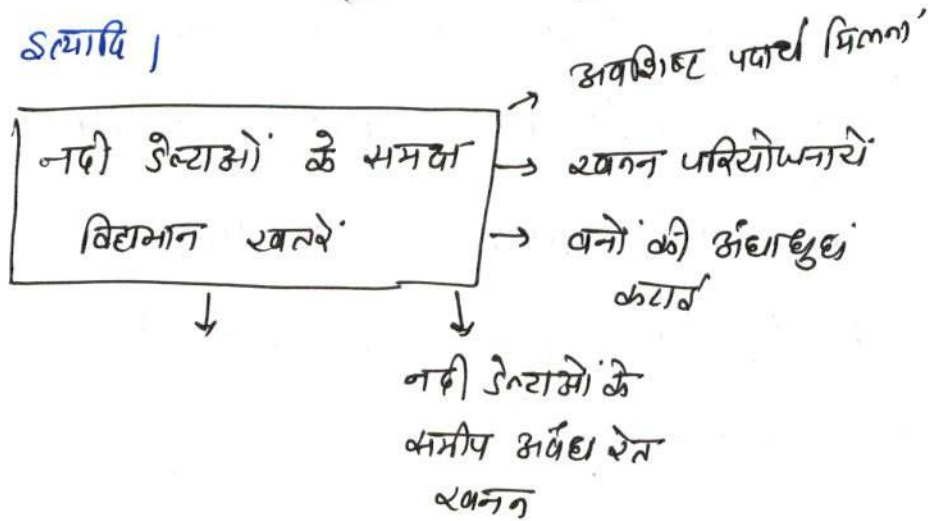
→ ये स्थान स्थल एवं जल के मिलन स्थल
होते हैं इसीलिए ~~कई~~ कई प्रकार के स्थानिक
जीव पाये जाते हैं।

— यहाँ पाये जाने वाले जंगलों का औषधीय
महत्व है।

— कार्बन अवशोषण (CO_2 sequestration) में

अहम योगदान होता है

- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मौखिक (मक महक इत्यादि)



समाधान -

- नदी डेल्टा के समीप CRZ नियमों को कठोरतापूर्वक लागू किया जाये जैसा कि CRZ नियम 2013 द्वारा तटीय क्षेत्रों के लिए किया गया है
- अंधाधुंध खनन को रूढ़ करवाया जाये
- अनुकूलन एवं शमन कार्यक्रम के अडुसा (पुनरोपलब्ध) कार्यक्रम किया जाये तथा जो वन कमी है, उनको संरक्षित किया जाये

- नदी डेल्टाओं के समीप खनन परियोजनाओं एवं औद्योगिक शक्तियों की खनन किया गया।
- औद्योगिक शक्तियों को नदी डेल्टाओं में प्रदूषण प्रदार्थ डालती हैं & उनको दूषित किया जाये।

इस प्रकार नदी डेल्टा अमूल्य प्राकृतिक धरोहर हैं अतः समय रहते इनका संरक्षण किया जाना चाहिए।

4. Give an account of the different types of earthquakes based on their zone of occurrence. Identify the earthquake prone regions of the world with special reference to India. Also explain the reasons for the occurrence of earthquakes in geologically inactive regions like Peninsular India.

घटित होने वाले क्षेत्र के आधार पर विभिन्न प्रकार के भूकंपों का विवरण प्रदान कीजिए। भारत के विशेष संदर्भ में विश्व के भूकंप प्रवण क्षेत्रों की पहचान कीजिए। साथ ही, प्रायद्वीपीय भारत जैसे भूवैज्ञानिक रूप से निष्क्रिय/स्थिर क्षेत्रों में भूकंपीय घटनाओं के कारणों की भी व्याख्या कीजिए।

भूकंप से तात्पर्य पृथ्वी तल में
कंपन से है जिसका कारण प्लेट विवर्तनिकी
सिद्धान्त के अनुसार प्लेटों के आपसी संपर्क
एवं उत्सार से है भूकंप एक पुरुष प्राकृतिक
आपदा है

भूकंप के प्रकार -

- विवर्तनिकी - विवर्तनिकी क्रियाओं अर्थात् प्लेटों
के संचरण व उत्सार के कारण
यथा : 2002 में गुजरात (भुज) में
भूकंप
- नियत - खनन परियोजनाओं के कारण
भी भूकंप आते हैं।
- नाभी किय
विस्फोट - कर्बुन नाभीकिय विस्फोट
के कारण भूकंप आता है।

भारत एक भूकंप सुभेद्य देशों में एक है।
यहां भूकंप के आधार पर भारत को चार उपर्युक्त
भागों में बांटा गया है जो भूकंप की तीव्रता
के अनुसार रखा गया है -

जोन V - भारत का हिमालय पर्वतीय क्षेत्र।

- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
- गुजरात का पश्चिमी तट

जोन - IV - दिल्ली, पंजाब, हरियाणा,
हिमालय का डिस्ट्रिक्ट क्षेत्र इत्यादि

हिम जोन - III - राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश,

जोन - II - दक्षिण का उपहितीय क्षेत्र।

- विश्व के उपर्युक्त भूकंपीय
क्षेत्रों में वलित पर्वतीय क्षेत्र,
बायात, लिक्वीपीरस का
उत्पन्न महासागरीय मेखला क्षेत्र है।

→ उपहितीय भारत में भूकंप - यद्यपि भारत को



प्रामाणिकीय क्षेत्र को ब्रह्मपु की इच्छा से सुरक्षित
स्थान माना जाता है परंतु 1967 में कोयला ब्रह्मपु
के पश्चात यह अवधारणा गलत हो गई है -

कारण -

विकास - (एक
गतिविधि) अथवा नदी घाटी
परियोजनाएं परियोजनाएं

इस प्रकार भारत का कोई भी क्षेत्र पूर्णतः
ब्रह्मपु पुनः नहीं है अतः आवश्यकता है ब्रह्मपु के
समाप्ति में पूर्व चेतावनी प्रणाली विकसित की जाये

5. Explain the reasons for the following: (a) Erosional forms dominate in the west coast while depositional forms dominate in the east coast of India. (b) Western Ghats in Karnataka receive more monsoon rainfall than Maharashtra and Kerala.

निम्नलिखित के कारणों की व्याख्या कीजिए: (a) भारत के पश्चिमी तट में अपरदनजन्य रूपों की अधिकता या बाहुल्य पाया जाता है, जबकि पूर्वी तट पर निक्षेपण रूपों का बाहुल्य पाया जाता है। (b) कर्नाटक में पश्चिमी घाट महाराष्ट्र और केरल की तुलना में अधिक मानसूनी वर्षा प्राप्त करते हैं।

भारत के पश्चिमी तट में अपरदनजन्य स्थलाकृतियाँ

1. भारत का पश्चिमी तट पर अधिकांश नदियाँ छोटी हैं जलस्वरूप वे अधिक अवसाद नहीं ला पाती जिससे डेल्टा का निर्माण नहीं हो पाता।

2. दो प्रमुख नदियाँ नर्मदा एवं तापी भ्रंशधारी से होकर बहती हैं जो उनके स्वयं द्वारा निर्मित नहीं हैं जलस्वरूप वे अपना अवसाद उसी भ्रंश धारी में निक्षेपित कर देती हैं।

3. पश्चिमी तट पश्चिम पूर्वी तट की भांति काल-काल नहीं है इसलिए नदियाँ वेग से समुद्र में मिलती हैं।

पूर्वी तट पर निक्षेपण रूप -

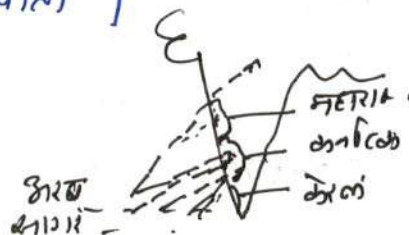
- भारत का पूर्वी तट अधिक काल-काल है जलस्वरूप अपरदन अधिक नहीं हो पाता।

- पूर्वी नद की नदियाँ यथा - गोदावरी, कृष्णा इत्यादि
बड़ी नदियाँ हैं तथा अधिक दूरी तक बहती हैं
मूलस्वरूप अधिक अवसाद वाली हैं जिससे
देखा निर्माण होता है।

⇒ कर्नाटक का पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा का
कारण -

- भारत के पश्चिमी नद पर वर्षा दक्षिण-पश्चिमी
मानसून की अरब शाखा से होती है। अरब
शाखा भारत के स्थलीय क्षेत्र में उबेरा करते समय
केरल के नद के समानांतर होती है मूलस्वरूप
अधिक वर्षा नहीं कर पाती और ऊपर उठकर कर्नाटक
के पर्वतीय क्षेत्रों से टकराती है जिससे
वहाँ अधिक वर्षा होती है महार

- महाराष्ट्र का नद इन शाखाओं से थोड़ा
दूरी पर होने के कारण - अधिक वर्षा प्राप्त
नहीं कर पाता।



यहाँ उल्लेखनीय है कि पर्वतीय क्षेत्रों में
एक पवनान्मुखी क्षेत्र अधिक वर्षा प्राप्त करने
है। अरब सागर की दूसरी शाखा गुजरात के तट
से मध्य भारत तक जाकर वर्षा करती है।

अतः अरब सागर की शाखाओं की
भारत में प्रवेश की दिशा के कारण कर्नाटक
तट केरल व महाराष्ट्र के अर्धवर्षा ज़्यादा वर्षा प्राप्त करती
है।

6. With increasing urbanisation in India, the land usage pattern is undergoing major changes. Comment.

भारत में बढ़ते शहरीकरण के साथ ही भू-उपयोग प्रतिरूप में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। टिप्पणी कीजिए।

भारत की जनगणना 2011 के अनुसार
भारत की जनगणना 2011 क्षेत्र शहरी क्षेत्र की
रूपी में आता है। शहरीकरण की प्रगति में
विकास की प्रक्रिया से सीधा सम्बन्ध है।

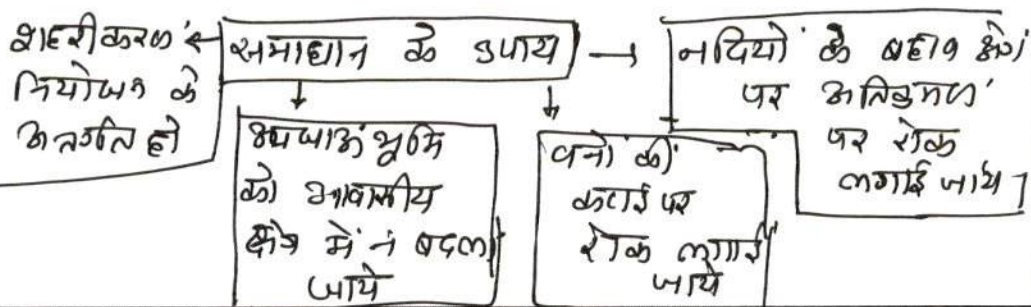
विकास ↑ → प्रवास शहरों की ↑ → शहरीकरण ↑
कोर

शहरीकरण के कारण भारत में भूमि उपयोग
में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं यथा -

- कृषि क्षेत्रों का आवासीय क्षेत्रों अथवा व्यावसायिक क्षेत्रों में रूपान्तरण
- वनों की कटाई कर सैदानी भागों में रूपान्तरण
- नदियों के निचले क्षेत्रों में अतिक्रमण
- जमीन सभोले, महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी स्थलों
पर अनसंरक्षित ढांचा नालस्वरूप परिवर्तन

प्रभाव

- शहरीकरण के लालबहारप पानी के निकास स्थान की समस्या उत्पन्न हो गई है जिसके कारण शहरी में सीवरेज समस्या बढ़ायी है
- शहरी क्षेत्रों में बाढ़ की आवृत्ति बढ़ी है क्योंकि पानी को सोखने, नभी-धारण करने की क्षमता घट गई है यथा - 2015 में चेन्नई बाढ़, हाल ही में उत्तरपूर्वी भारत व राजस्थान में बाढ़.
- महत्वपूर्ण एवं उपजाऊ भूमि का व्यावसायिक उपयोग होने पर कृषि हेतु भूमि कम पडनी जा रही है
- कृषि भूमि कम होने पर पैदावार अधिक के दबाव से रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का उपयोग बढ़ा है जिससे स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याये उत्पन्न हुई है;



इस प्रकार शहरीकरण को वास्तविकता
मानकर संस्थाओं के समाधान का प्रयास करना
चाहिए जैसा सरकार ने प्रयास किया भी है -
स्मार्ट सिटी मिशन, अहल मिशन। हाल ही
में शहरी गुणवत्ता के लिए शहरी विकास
मंत्रालय ने 'शहरी गुणवत्ता सूचकांक' भी
काया है।

7. How is the coal bearing strata of India classified in geological terms? Why does coal remain the most important source of energy in India and what are its implications?

भूवैज्ञानिक शब्दावली में भारत के कोयला धारण करने वाले संस्तर को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है? कोयला भारत में ऊर्जा का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत क्यों बना हुआ है एवं इसके निहितार्थ क्या हैं?

भारत में कोयला मुख्यतः अवसादी शैलों में पाया जाता है। कोयला निक्षेपों के अवसादीकरण के लक्षणरूप प्राप्त होता है। भारत में मुख्य कोयला क्षेत्र - गोंडवानाखंड की अवसादी चट्टानें हैं। एवं

प्रमुख उत्पादक क्षेत्र - छोटा नागपुर क्षेत्र
- झारखण्ड का रानीगंज, झरिया
- छत्तीसगढ़ का ब्योमर, भूपुरखंड
क्षेत्र
- दलीसगढ़ इत्यादि

भारत में कोयला ऊर्जा का स्रोत -

- स्वतंत्रता प्राप्ति से ही कोयला भारत में प्रमुख ऊर्जा स्रोत बना हुआ है।
हालांकि भी भारत में लगभग 75% विद्युत को ताप विद्युत स्रोतों से प्राप्त की जाती है।

इसके प्रमुख कारण निम्न लिखित हैं -

1. भारत में कोयले की उपलब्धता ज्यादा होना
2. ऊर्जा के अन्य स्रोत यथा (बायोमीथेन ऊर्जा, जल बिद्युत) हेतु संसाधनों की कमी एवं स्थानीय विरोध की समस्याएं
3. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का पूर्ण पोहन नहीं एवं तकनीक पुरानी व लागत ज्यादा

निहितार्थ -

- भारत में कोयलेपर ऊर्जा क्षेत्र की निर्भरता से भारत में प्रदूषण की मात्रा बढ़ी है। भारत आप वरिष्ठ के 10 प्रमुख कार्बन-डायऑक्साइड उत्सर्जक देशों में है।
- भारत अपने पेरिस अग्रीमेंट-2015 की पूर्ण क्रियाकृति नहीं कर पा रहा क्योंकि इसमें भारत ने 40% मात्र नवीकरणीय स्रोतों द्वारा प्राप्त किया जाना तय किया था।
- कोयला क्षेत्र में उत्पादक होने के बावजूद विकास की गति इतनी तेज नहीं है।

चूंकि उनके उत्पादों का असुर लाभ नहीं मिल पाता।

- वायु प्रदूषण एवं पानी प्रदूषण की समस्या (आदि)

इस प्रकार कोयला क्षेत्रों पर भारत की अपनी निर्भरता कम करनी होगी। जिस हेतु भारत ने उद्योगों में प्रारंभ किये हैं यथा - जवाहर लाल नेहरू सौर मिशन, राष्ट्रीय जल मिशन, ~~राष्ट्रीय~~ कोयले पर उपकरण लगाने (आदि)

8. Forest fires have become a regular feature during summers in the Western Himalayas. What are the causes behind this phenomenon? Critically examine the efforts made by authorities in countering this problem. Do periodic forest fires have any benefits associated with them?

पश्चिमी हिमालय में ग्रीष्म ऋतु के दौरान दावानल/वनाग्नि (फॉरेस्ट फायर) एक नियमित घटना बन गयी है। इस परिघटना के पीछे क्या कारण हैं? इस समस्या से निबटने के लिए प्राधिकरणों द्वारा किए गए प्रयासों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। क्या समय-समय पर होने वाली दानावल की घटनाओं के कुछ लाभ भी हैं?

पश्चिमी हिमालय ग्रीष्मकालीन दावानल
के उत्पत्ति स्रोत हैं। क्योंकि -

- पश्चिमी हिमालय में मुख्यतया चीड़ व देवदार
के वृक्ष हैं जो उष्ण होते हैं, लकड़खरप
आदि को जलती लाते हैं।
- पश्चिमी हिमालय में वर्षा की मात्रा भी
पूर्वी हिमालय की अपेक्षा कम है, लकड़खरप
गर्भियों में यह क्षेत्रों में शुरुआत ही जाता
है।

इस समस्या से निपटने हेतु जलवायु
पर्यावरण एवं जलवायु विकास मंत्रालय, वन
विभाग द्वारा निम्नलिखित उपाय किये गये हैं -

- वन क्षेत्रों में चीड़ के वृक्षों के पत्तों की
एकत्रित करना
- दावानल रोकने में स्थानीय समुदायों,

स्वयं सहायता समूहों का साथ लेना।

- वाकानल की धमकें रोकने हेतु जागरूकता कार्यक्रम।

परंतु ये सब उपाय समस्या के अनुसार पूर्ण नहीं हैं।

- पर्यावरण मंत्रालय व अन्य मंत्रालयों में आपसी समन्वय का अभाव है।
- स्थानीय समुदायों में जागरूकता ^{की जा} एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति उदासीनता।
- अधिकतर उपाय घटना होने के बाद उठाये जाते हैं जो एक प्रकार से पोस्टमार्टम की तरह हो जाते हैं।

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर के वनों में विनाश के वेदों को हटाने का आदेश दिया क्योंकि इससे वाकानल व स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ हो रही थीं।

वाकानल का उभाव -

वाकानल के कारण महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों, वन्य जीवों का विनाश।

हो जाता है) यद्यपि वातावरण के कारण

- कृषि भूमि के लिए उपलब्धता बढ़ जाती है
- भूमि की उर्वरता बढ़ती है

परंतु इसके दुष्प्रभावों के कारण
इसके लाभ अत्यंत गौण हो जाते हैं, अतः इन
धमकों को रोकने में उपासों में तैयारी लानी
चाहिए।

9. What are sunrise industries? Elaborate on the potential of these industries in India with a special focus on the food processing industry.

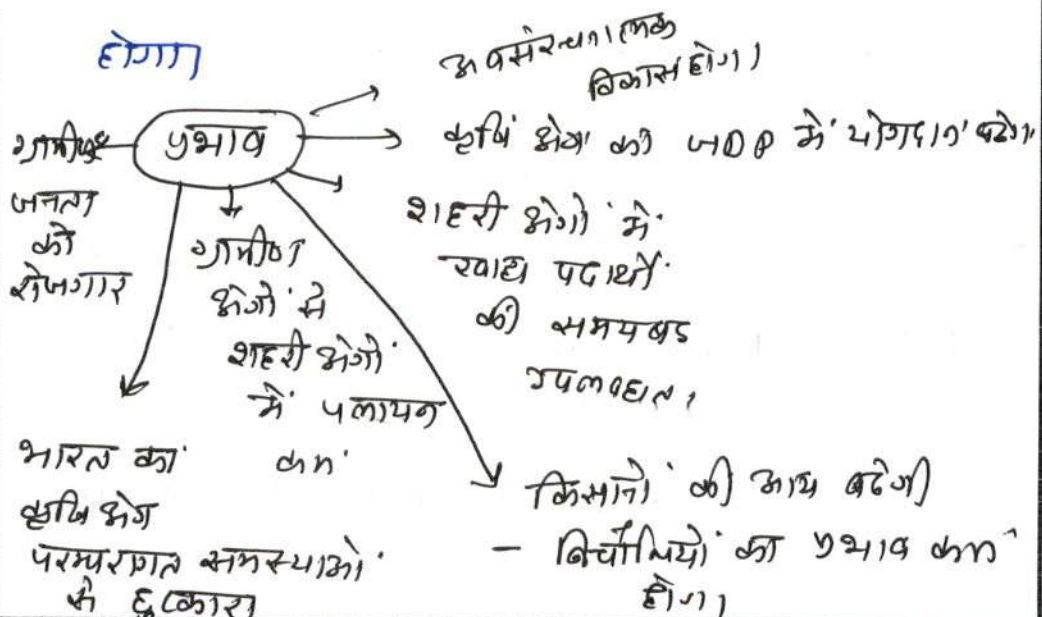
सनराइज उद्योग क्या है? खाद्य प्रसंस्करण उद्योग पर विशेष बल देते हुए भारत में इन उद्योगों की संभावना के संबंध में विस्तार से बताइए।

सनराइज उद्योग से तात्पर्य " वे उद्योग
जिनके विकास की संभावनाएं अत्यंत उच्च हैं
हैं तथा ध शीघ्र विकास, कम निवेश से संभव
हैं।"

सनराइज उद्योगों के अंतर्गत कृषि
उद्योग, ऊपजा उद्योग, दवा उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण
उद्योग श्यादि आते हैं।

- ये उद्योग आधिकारिक रूप साध्य होते हैं
लाभस्वरूप लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।
- कम निवेश की आवश्यकता होती है।
स्वरूप कुटीर उद्योगों के रूप में विकास
की संभावना होती है।
- अभी तक पूर्ण विकास की अवस्था में नहीं
पहुंचे हैं जिससे इनमें अभी विकास की
हैजा विद्यमान है।
- भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग

- एक प्रमुख उद्योग खाद्य प्रसंस्करण उद्योग है।
- भारत एक कृषि प्रधान देश है, मालखरकप रस उद्योग की संभावनाये है।
- भारत माप लाल, आब्लियो श्यादि मे निरव के प्रमुख उत्पादक देशो मे शामिल है।
- सरकार भी इस हेतु प्रयासरत है, अन्ते विदेशी निवेश के नियमो मे उदारता वी गर्व है जिससे अधिकधिक निवेश आये।
- भारत का लक्ष्य 30% खाद्य पदार्थ प्रसंस्कृत के अभाव मे खराब हो जात है इससे खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का विकास होगा।



इस प्रकार खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की अपार
संभावनायें भारत में विद्यमान हैं। भारत को
इन क्षमताओं का पूर्ण फ़ायदा करना चाहिए।

10. Scientific and technological advancements have removed the constraints posed by geographical factors which determine the location of industries. Comment. Giving examples, discuss the new factors that have come into play as a result.

वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय प्रगति ने उद्योगों की अवस्थिति को निर्धारित करने वाले भौगोलिक कारकों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली बाधाओं को समाप्त कर दिया है। टिप्पणी कीजिए। इनके परिणाम स्वरूप उभरने वाले नए कारकों पर भी सोदाहरण चर्चा कीजिए।

उद्योगों की अवस्थिति को परम्परागत रूप से दो भागों में बांटा जाता था -

(i) भारदासी उद्योग

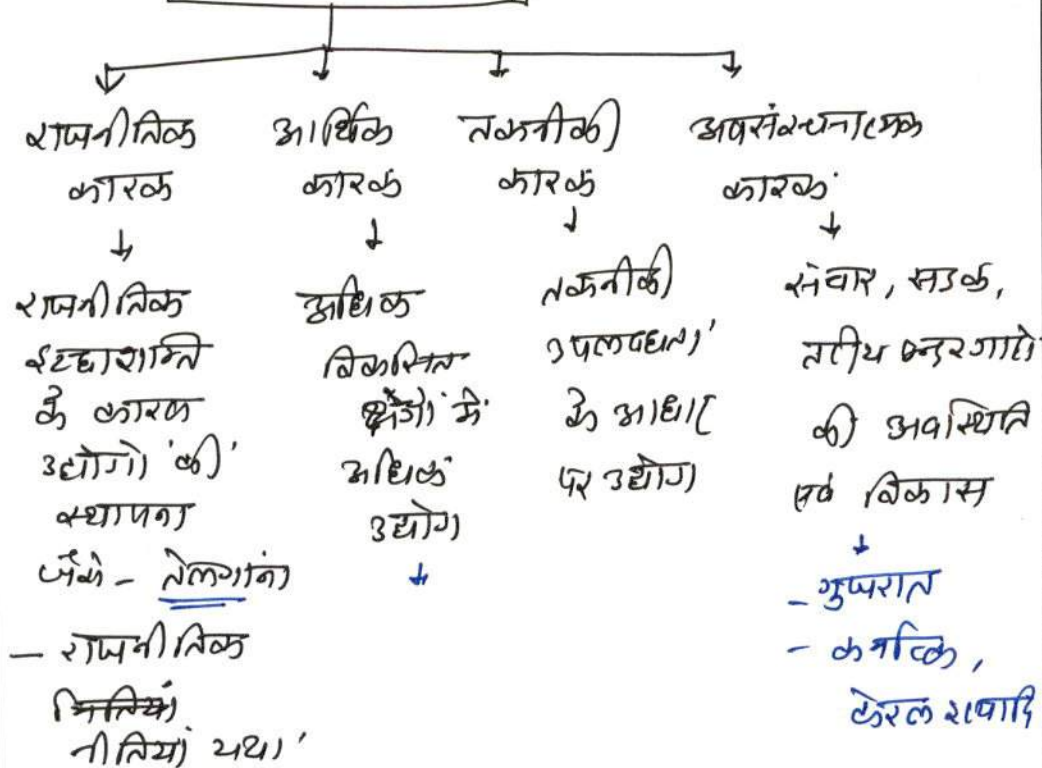
(ii) गैर भारदासी उद्योग

परंतु वर्तमान परिदृश्य में वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज यह निर्दिष्ट नहीं है। अब भौगोलिक कारकों के ऊपर आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी कारक अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। यथा -

- लौह-इस्पात उद्योग पहले लौह-इस्पात, कोयला इत्यादि के खनक क्षेत्रों के पास ही विकसित होते थे लेकिन अब यह आवश्यक नहीं है कि जैसे - विशाखापट्टणम में लौह-इस्पात उद्योग का विकास
- अब अलग उद्योग भी भारदासी उद्योगों के से एक है परंतु आज अलग उद्योग लगभग

पुरे भारत में फैला हुआ है।

उद्योगों के विकास को प्रभावित करने वाले नये कारकों का उदय हुआ है यथा -



राजस्थान -

- रिसर्वेंट राजस्थान
- बाइसेंट गुप्तराज

इस प्रकार व्यापक आर्थिक कारकों के साथ-साथ अन्य कारक भी उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करते हैं।

1

11. Give a brief distribution of major grasslands of the world. Discuss the reasons behind the temperate grasslands becoming the grain baskets of the world. Also compare their performance vis-a-vis tropical grasslands in this regard.

विश्व के प्रमुख घासस्थलों के वितरण का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कीजिए। शीतोष्ण घासस्थलों के विश्व की खाद्यान्न टोकरी बनने के निहित कारणों की चर्चा कीजिए। इस संबंध में उष्णकटिबंधीय घासस्थलों की तुलना में उनके प्रदर्शन की चर्चा भी कीजिए।

विश्व में प्रमुखतया दो प्रकार के घास स्थल पाये जाते हैं -

- स्टेपी घास स्थल
- सवाना घास स्थल

स्टेपी घास स्थल शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में जबकि सवाना घास स्थल उष्ण कटिबंधीय स्थलों में पाये जाते हैं। विश्व के प्रमुख घास स्थल निम्न हैं -

- स्टेपी घास स्थल - U.S.A. का पेंसिल्वेनिया क्षेत्र
- यूरोप का स्टेपी क्षेत्र
 - वेनेजुएला के लॉस रॉस क्षेत्र
 - द. अफ्रीका के वेल्ड क्षेत्र
 - ऑस्ट्रेलिया का क्विन्सलैंड

- सवाना घास स्थल - ब्राजील का पामा क्षेत्र
- वेनेजुएला का कैम्पोस
 - द. अफ्रीका का सवाना क्षेत्र

शीलेढा धास स्थलो में विश्व की टोकरी
बनने के पुन्य कारक हैं -

- (1) उच्च तकनीकी का उपयोग
- (2) उपजाऊ मृदा का पाया जाना
- (3) किसानों की आर्थिक सम्पन्नता
- (4) जलवायवीय कारक
- (5) सरकार द्वारा किसानों को सहायता इत्यादि

उष्ण कटिबंधीय स्थल व शीलेढा
कटिबंधीय स्थल दोनों ही महत्वपूर्ण धास स्थल
हैं परंतु शीलेढा कटिबंधों के समान
उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों का विकास नहीं हो
पाया है - जागरणकला की कमी,
- जलवायवीय विविधता
- वर्षा की मात्रा कम होना इत्यादि

12. Weather and climate information plays a significant role in increasing agricultural productivity as well as minimising crop losses. Comment. Also examine the ways in which forecasting system can be made more effective and inclusive.

मौसम और जलवायु संबंधी सूचना कृषि उत्पादकता को बढ़ाने एवं साथ ही साथ फसल के नुकसान को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। टिप्पणी कीजिए। इसके साथ ही उन उपायों का परीक्षण कीजिए जिससे पूर्वानुमान प्रणाली को और अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाया जा सकता है।

कृषि उत्पादकता जलवायु एवं मौसमी परिवर्तनों के प्रति संवेदनशील होती है, अतः यदि पूर्व सूचना द्वारा आपदाओं के सम्बंध में कृषकों को जागरूक हो जाये तो फसल की उत्पादकता को बढ़ाया व बढ़ाया जा सकता है। यथा - सिंगी आउटपुट - यदि किसानों को पहले से सिंगी आउटपुट का पता रहेगा तो वे पूर्व सूचना रखेंगे जिससे फसल की उत्पादकता- उभाविन व हो। - बाढ़ व सूखे की संभावना का पूर्व विचारित होने पर इसी अनुसार फसल उगाई जाये ताकि उकसान कम से कम हो।

आजकल सरकार भी इस हेतु कई उपासनाएं हैं और सूचना व जल उपाय,

इत्यादि के माहयत से दुषि पर अलकापकीय परिवर्तनों के उगाव को कम किया जा रहा है।
- यथा - हाल ही में उरीमा ने चतुप्रात वनमण्डी पणाली विकसित की है ताकि चतुप्रात आगे से पहले सामान्य जग को सूचित किया जा सके।

13. The Paris Climate agreement sets ambitious goals but does not go far enough in mechanisms to achieve the aims. Comment. Also highlight the challenges which a developing country like India faces to achieve the targets it has set for itself.

पेरिस जलवायु समझौता महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को तो निर्धारित करता है किन्तु इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त प्रावधानों की व्यवस्था नहीं करता है। टिप्पणी कीजिए। साथ ही, भारत जैसे विकासशील देश द्वारा अपने लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने में सामना की जाने वाली चुनौतियों पर भी प्रकाश डालिए।

पेरिस जलवायु समझौता - 2015 जलवायु परिवर्तन के प्रति विश्व की संवेदनशीलता को दर्शाने वाला है UNFCCC के NEM किया गया उपास है इसके महत्वपूर्ण प्रावधानों के अन्तर्गत UNDC की घोषणा, JCF की स्थापना, विश्व के नापमान इति को 1990 के स्तर से 2.1 पर लाना इत्यादि है।

पेरिस एग्रीमेंट एक अच्छा व अनुनियोजित उपास है परंतु इसमें आवश्यक प्रावधानों का अभाव है यथा -

- इसमें UNDC को बाध्यकारी नहीं बनाया गया है जिससे यह राष्ट्र विशेष की वृद्धि पर निर्भर हो गया है।
- बाध्यकारी प्रावधान नहीं बनाये गये।
- JCF की स्थापना हेतु कोई ठोस उपास

नहीं किये गये।

- विकसित एवं विकासशील देशों में ऊर्जा सुरक्षा तथा अनुकूलन एवं शक्ति जैसे मुद्दों पर सामंजस्य का अभाव।
- जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो चुके देशों के लिए एक तरह की ब्यापकता का अनुभव दिया गया परंतु व्यावहारिक उपदान नहीं किया गया।

इस प्रकार पेरिस जलवायु सम्मेलन में 'Common But Differentiated Responsibility' का अभाव इसे पूर्ण कारगर बनाने से रोकता है।

भारत का पक्ष -

भारत ने लीमा सम्मेलन - 2014 की घोषणा के अनुरूप Oct-2015 में ही अपना INDC (Intended Nationally Determined contribution) घोषित किया जिसके अन्तर्गत -

- भारत 2005 के स्तर से CO_2 में 33% - 35% कमी करेगा
- 175 गीगावाट गैर परमाणवीय संधारणों की क्षमता
- कार्बन उच्छेदकों की मात्रा बढ़ाना (यदि परंतु भारत के लिये यह स्तर असाध्य नहीं है क्योंकि -
- भारत मात्र भी (लगभग 25%) विद्युत हेतु कोयले पर निर्भर है
- CO_2 को कम करने हेतु 'करीबी की समझौता'
- अमेरिका के समझौते से हटने के कारण विविध समस्या
- विकास की दर में घटने का अनुपात /
इस प्रकार पेरिस समझौते की वास्तविक उपलब्धि हेतु सभी देशों को साथ जाना होगा और इसे पूर्ण रूप से समल बनाया होगा

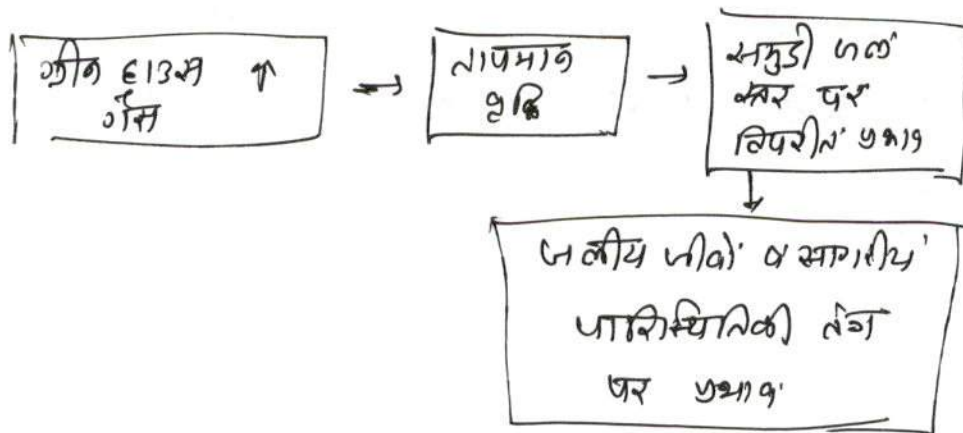
14. Describe the factors responsible for increase in marine pollution in the past few decades. What impact does marine pollution have on the ocean ecosystem? Discuss the measures taken by the international community to deal with it.

पिछले कुछ दशकों में समुद्री प्रदूषण में हुई वृद्धि के लिए जिम्मेदार कारकों का वर्णन कीजिए। महासागरीय पारिस्थितिकी तंत्र पर समुद्री प्रदूषण का क्या प्रभाव पड़ता है? इससे निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा किए गए उपायों की चर्चा कीजिए।

समुद्री प्रदूषण के नालपर्य - "समुद्र की नापमान प्रदूषण में होने वाले परिवर्तन हैं।"

समुद्र के नापमान में होने की वृद्धि की जलीय जीवों पर विपरीत प्रभाव डाल सकती है। इसके प्रमुख कारण हैं -

- अपशिष्ट पदार्थों का समुद्र में गिरना उत्पादन
- जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप समुद्र का नापमान बढ़ना



उत्थाव'

- सागरीय उदुषण से अधिकतर जलीय जीवों की हानि हो जाती है
- कोरल रिफ्स की मृत्यु व विनाश
- समुद्री जैववैविध्य (Biodiversity) का विनाश
- पर्यावरण में कमी के द्वारा आर्थिक उत्थाव -
- समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र का नष्ट होना
- कार्बन उत्सर्जन (CO₂ का वातावरण में ज्यादा मिलना) → तापमान वृद्धि → जलवायु परिवर्तन

अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा सागरीय उदुषण हेतु निम्न कदम उठाये हैं -

1. वैश्व कन्वेंशन - सागरीय क्षेत्रों में अप्रतिष्ठित पदार्थों को निकालने पर रोक
2. SDG में पावटान - उदुषण मुक्त विश्व की स्थापना

15. Discuss the environmental impact of electronic waste and the best practices for its handling in the context of the E-waste (Management) Rules, 2016. Also suggest some ways to incentivise consumers to utilise and dispose-off the e-waste properly.

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट के पर्यावरणीय प्रभावों एवं ई-अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2016 के संदर्भ में इसके निष्पादन के लिए सर्वोत्तम तरीकों पर चर्चा कीजिए। ई-अपशिष्ट के उचित उपयोग और निपटान के लिए उपभोक्ताओं को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु कुछ उपाय भी सुझाइए।

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट से वास्तविक इलेक्ट्रॉनिक सामानों तथा - पुराने बैटरी, मोबाइल फोन आदि द्वारा पर्यावरण पर होने वाले विपरीत प्रभाव हैं।

इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट सम्पूर्ण पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित कर रहा है। तथा -

- स्वास्थ्य पर प्रभाव
- वातावरण को प्रदूषित होगा
- पारिस्थितिकी तंत्र पर दुष्प्रभाव
- —

सरकार द्वारा इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्टों के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने हेतु ई-अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम 2016 जारी किया।

किये जिसके अनुसार -

- ई-अपशिष्टों को धार्मिक से डिस्पोजल किया जायेगा

- ई-अपशिष्टों को वातावरण में खुला नहीं डाला जायेगा।
- गणपदक कंपनियों पर प्रावधान लागू।
- ई-अपशिष्टों के सम्बन्ध में जनता में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। इसके हेतु -
- टीवी, मीडिया, NDTV के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाये।
- ई-अपशिष्टों के सम्बन्ध में विश्व क्षेत्र पर कायकारी कठिनाई लागू की जाये।
- जो देश ई-अपशिष्टों को दूसरे देशों में डंप करते हैं, उनके खिलाफ विश्वसन्तुषाप्त एक हो।

16. An emissions-reduction approach to fighting global warming is not enough. Alternative solutions involving climate engineering might have to be deployed sooner than we think. Defining climate engineering, critically examine the statement.

ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए केवल उत्सर्जन-न्यूनीकरण उपागम (दृष्टिकोण) पर्याप्त नहीं है। संभवतः हमें अनुमानित समय से पूर्व ही, क्लाइमेट इंजीनियरिंग को सम्मिलित करने वाले वैकल्पिक समाधान को अपनाने की आवश्यकता पड़ सकती है। क्लाइमेट इंजीनियरिंग को परिभाषित करते हुए, इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

ग्लोबल वार्मिंग से तात्पर्य जलवायु परिवर्तन के कारण एवं ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से क्षति द्वारा तापमान में होने वाली बढ़ोतरी से है। "

ग्लोबल वार्मिंग से निपटने हेतु मुख्यतः दो मुख्य उपागम अपनाये जाते हैं -

- (i) अनुकूलन (Adaptation)
- (ii) शमन (Mitigation)

अनुकूलन के अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन के मध्य उत्सर्जन - शून्य के प्रति सहा नीतियाँ बनाकर ताकि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कम से कम परे एवं शमन के अन्तर्गत उत्सर्जन को - शून्य करना शामिल है। विकासशील देशों विशेषकर भारत का यह तर्क है कि जलवायु - परिवर्तन को न्यून

उत्सर्जन-धुनीकरण प्रक्रिया से रोकना
पर्याप्त नहीं है क्योंकि वास्तव में इसे पूर्ण
रूप से रोकना नहीं जा सकता इस हेतु

क्लारिफिकेशन इंजीनियरिंग को अपनाया जाये
अर्थात् अनुकूलन, शक्ति के साथ-साथ
क्लारिफिकेशन में इस प्रकार से परिवर्तन लाया
जाये ताकि वाष्पमान को कम किया जा सके
पथ -

- आकाश में छोटे-छोटे कणों लगाकर धूल
की प्रभाव को वापस परावर्तित कर दिया
जाये।
- एयररोसोल द्वारा कृत्रिम वर्षा करना
- ~~सर्व~~ के द्विजकाल द्वारा वाष्पमान को कम
करना इत्यादि।

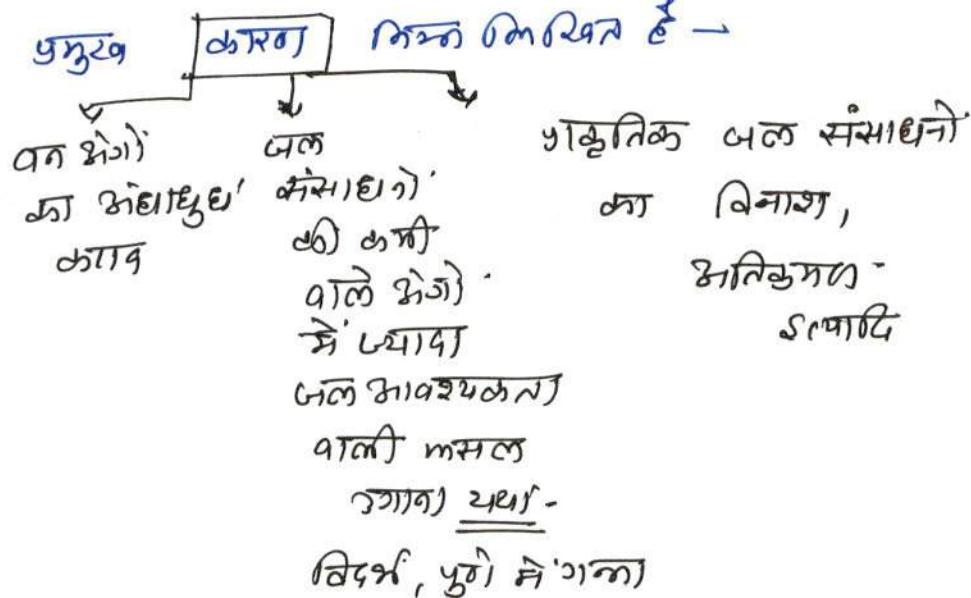
इस प्रकार क्लारिफिकेशन इंजीनियरिंग
के माध्यम से वाष्पमान प्रदूषण को कम किया
जा सकता है।



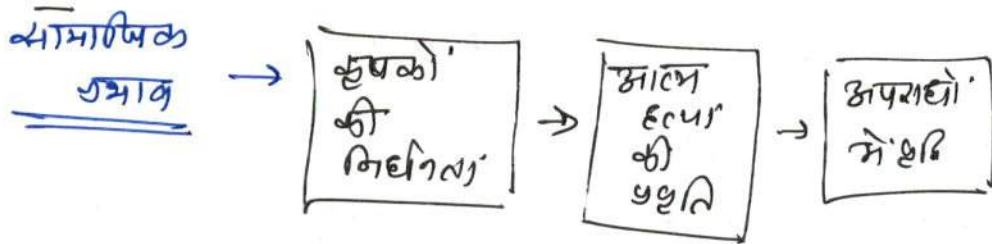
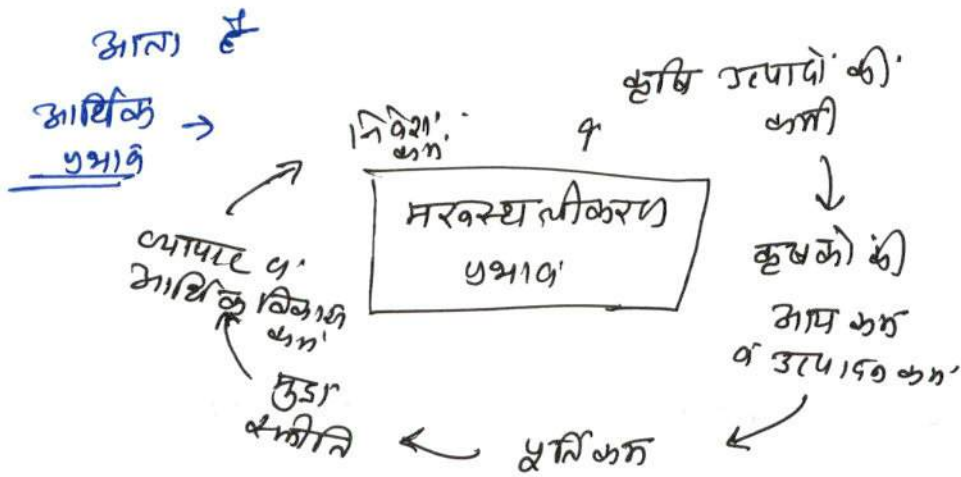
17. Discuss how drought is more of a man-made disaster than a mere deficiency of rainfall. Elaborate on the consequences of desertification that drought prone regions face. Also, bring out the preventive steps to be taken in light of targets to curb desertification as mentioned under the SDGs.

चर्चा कीजिए कि किस प्रकार सूखा केवल वर्षा की कमी से पैदा आपदा न हो कर मुख्य रूप से एक मानव-निर्मित आपदा है। सूखा प्रवण क्षेत्रों द्वारा सामना किए जाने वाले मरुस्थलीकरण के परिणामों को विस्तार से बताइए। साथ ही, मरुस्थलीकरण पर अंकुश लगाने के लिए SDGs के अंतर्गत उल्लिखित लक्ष्यों के प्रकाश में उठाए जाने वाले निवारक कदमों को स्पष्ट कीजिए।

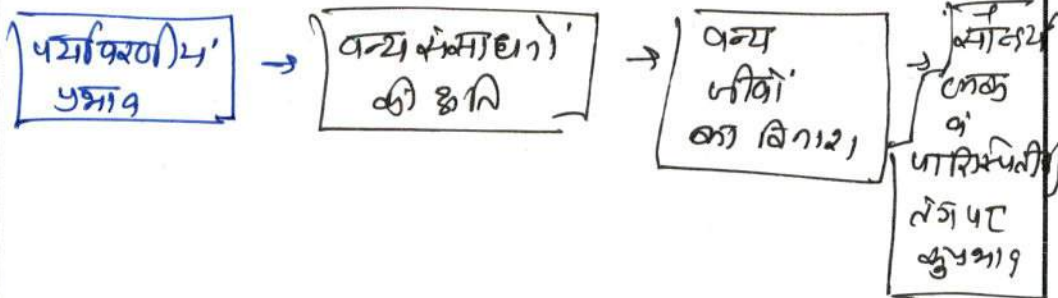
— सूखा एक प्रमुख प्राकृतिक आपदा माना जाता है। जब वर्षा 25 से.मी. से कम हो तो सूखे की परिस्थितियां मानी जाती हैं। परंतु आज सूखा केवल प्राकृतिक आपदा ही नहीं मानव निर्मित आपदा भी है। इसके प्रमुख कारण निम्न लिखित हैं —



सूखा प्रवण क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण एक प्रमुख समस्या बन कर सामने



इस प्रकार सरकस्थलीकरण धुरे सनाज को उभावित करना है।



SDG क्षेत्र के आन्तर्गत सरकस्थलीकरण पर लोक लगाने का उवास किया गया है। इसके अन्तर्गत 'To combat Desertification'

इसके की अलावा UNFCCC और

- UN convention to combat Desertification (UNCCD) की अलावा की गई है]

18. India's first National Disaster Management Plan may fulfill the legal requirement of having a plan but it may not be very effective in achieving its objective of building resilience. Critically analyse.

भारत की प्रथम राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना, भले ही एक योजना होने की विधिक आवश्यकता को पूर्ण कर सकती है किन्तु यह प्रत्यास्थता निर्माण करने के अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में अधिक प्रभावी नहीं हो सकती। आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

भारत एक आपदा सुभेद्य देश है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के UNSDR के अनुसार
चीन के बाद भारत में आपदा के कारण सर्वाधिक
हानि होती है।

हाल ही में भारत सरकार द्वारा
प्रथम राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना की घोषणा
की गई जिसके अन्तर्गत -

- आपदा के सम्बन्ध में रोकथाम हेतु अल्प-कालीन एवं दीर्घकालीन उपाय अन्तर्गते जायेगें।
- भारत सेंटर फ्रेमवर्क के अनुसार चार पराधीन नीति अपनायेगा।

[आपदा की पूर्व पहचान
आपदा की समय पूर्व रोकथाम
आपदा के समय नीति
आपदा पश्चात सुधारण नीति]

भारत ने यद्यपि विधिलेख रूप से चोपना को पूर्ण बनाया है परंतु यह अपने उद्देश्य शक्ति में समल होती नहीं दिख रही है इसके डिप्लोमट में निम्न लिखित समस्याये हैं -

(i) आपदा की पूर्व पहचान हेतु पूर्ण निगरानी तंत्र का विकास नहीं किया गया है।

(ii) आपदा पश्चात डिप्लोमटि पोस्टमार्टम कार्यवाही की तरह है, आवश्यक है कि इसके अन्तर्गत आपदा पूर्व कार्यवाही पर ध्यान दिया जाये।

(iii) स्थानीय जनता एवं उद्योगों में जागरणकार्य का अभाव

(iv) स्थानीय आपदाओं को इसके अन्तर्गत शामिल नहीं किया गया है।

इस नीति को समल करने हेतु -

- स्थानीय समुदाय, SHGs, NGOs को सहकारी भूमिका दी जाये।
- सोशल मीडिया, पत्रिकाओं के माध्यम से उचार प्रसार किया जाये।

19. A better prepared community is key to effective disaster risk reduction. Citing specific examples, examine the importance of the role of local government and community in dealing with disasters.

प्रभावी आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए एक बेहतर रूप से तैयार समुदाय महत्वपूर्ण है। विशिष्ट उदाहरण देते हुए आपदाओं से निपटने में स्थानीय सरकार एवं समुदाय की भूमिका के महत्व का परीक्षण कीजिए।

आपदा जोखिम से नात्पर्य - "मानवीय एवं हानिकारक कारकों द्वारा उत्पन्न आपदाओं से होने वाली समस्याओं से हैं।"

आपदा जोखिम को कम करने हेतु एवं प्रभावी रोकथाम हेतु केन्द्र एवं स्थानीय सरकार का सामंजस्य अत्यन्त आवश्यक है।

कारण

- जागरूक स्थानीय समुदाय होने पर नीतियों का क्रियान्वयन अत्यन्त आसान हो जाता है।
- स्थानीय तंत्र (यथा - ग्राम पंचायत) स्थानीय बचाव श्रेणियों से पूर्ण रूप से वाकिफ होती है, अतः बचाव कार्यों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।
- स्थानीय तंत्र एवं जनसमुदाय किसी भी आपदा के समय सर्वप्रथम वहाँ

स्थापित होते हैं; अतः एक आपदा की प्रभावण
की कम करने में सहायक है।

- आपदा पश्चात स्थानीय लोगों की मदद की
प्रतिक्रिया सहायता, बचाव तैयारी, खाद्य समस्या
को निपटा जा सकता है।

हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा
सेक्टर स्तर के अनुपालन में राष्ट्रीय
आपदा प्रबंधन नीति जारी की जिसके
अनुसार स्थानीय समुदाय को साथ लेकर
आपदा राहत कार्य चलाये जायेंगे।

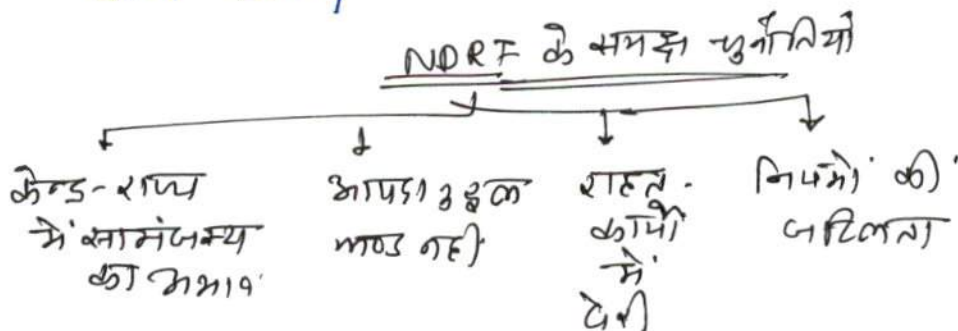
- स्थानीय समुदाय व स्थानीय सरकार
की मदद से इन राहत कार्यों में भागीदारी
है यथा - हाल ही में उत्तराखण्ड में भू-
स्खलन पश्चात स्थानीय लोगों
की प्राथमिकता।

20. What is the role of NDRF in managing disasters in the country? Highlighting the challenges that NDRF has been facing, discuss why it is still the armed forces which end up being the most visible force at hand during disasters.

देश में आपदाओं के प्रबंधन में NDRF की क्या भूमिका है? NDRF द्वारा सामना की जाती रही चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए चर्चा कीजिए कि आपदाओं के दौरान केवल सशस्त्र बल ही क्यों अभी भी सहज और सर्वाधिक उपलब्ध बल के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

भारत काय विश्व का दुसरा सबसे बड़ा आपदा सुमेय देश है आपदा के उर्बेधन हेतु सरकार द्वारा NDRF की स्थापना की गई है जिसके द्वारा -

- आपदा के समय बेहतर प्राथमिक चिकित्सा एवं स्वच्छ समस्या को हल करना
- आपदा के समय राज्यों को आर्थिक सहायता देना
- NDRF के कारण आपदा समय में एक जलज संकट की उपलब्धता रहती है जिससे वीसाघनों की कमी का सामना नहीं करना पड़ता



भारत में महामांग केन को आपदा के समय राहत कार्यों में प्रयोग किया जाता है और भी यह विश्वसनीय है क्योंकि आपदा की चुनौतियों से निपटने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त है और इसकी कार्य शैली (बिना थके लगातार कार्य करना) भी उपयुक्त है जो कि स्थानीय पुलिस में नहीं पाई जाती।

परंतु आवश्यकता है कि स्थानीय काबुदाय, पुलिस, स्थानीय सरकार तथा ग्राम पंचायत को भी इस कार्य में शामिल किया जाये ताकि समय पर राहत पहुंच सके।

